f'k{kd f'k{kk e dk'kyi.k if'k{k.k dh vko';drk

Mk0 ehu 'kek
शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री टीकाराम कन्या महाविद्यालय, अलीगढ़, उ0प्र0, भारत

शिक्षा के द्वारा मनुष्य को सभ्य व सुसंस्कृत बनाया जाता है। शिक्षा से ही बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास सम्भव है। मानव विकास का मूल आधार शिक्षा है। शैक्षणिक कार्य करने का उत्तरदायित्व शिकक पर है। अतः शिक्षक को अपने शैक्षणिक कार्य को उन्नत बनाया होगा। शिक्षक शिक्षा का अर्थ है। भावी तथा सेवारत अध्यापकों का सर्वांगीण विकास करना। शिक्षण कार्य कौशलपूर्ण करना चाहिए। शिक्षक को ऐसे वातावरण का निर्माण करना चाहिए, जिसमें बालक सरलता से सीख सके तथा अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर सके। शिक्षक को शिक्षण के प्रति सन्तुलित एवं सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए। आज सरकारी महाविद्यालय तथा स्वपोषित महाविद्यालयों का तीव्र गति से विकास हो रहा है, लेकिन शिक्षण की गुणवत्ता का तीव्र गति से ह्रास हो रहा है। आज छात्र अध्यापकों को डिग्रियाँ तो प्राप्त हो रही हैं लेकिन शिक्षण कौशल का अभाव है। आज स्वपोषित महाविद्यालय कुकुरमुत्तों की तरह जगज–जगह खुल गये हैं। उनकी दशा अतयन्त शोचनीय है। वहाँ या तो अध्यापक हैं ही नहीं या योग्य अध्यापकों का अभाव है, जिसके कारण शिक्षण गुणवत्ता का ह्रास हो रहा है। महाविद्यालय में योग्य विषय विशेषज्ञ का अभाव है। परम्परागत शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जा रहा है तथा पुराने तैयार किये गये नोट्स से पढ़ाना। शिक्षण संस्थाओं के पास प्रायोगिक शिक्षण सामग्री का अभाव है। अटल बिहारी बाजपेयी ने अपने भाषण में कहा था, "Corruption has taken away the Fabric of Indian Economy. Corruption had adversely affected Indian growth."

शिक्षक शिक्षा को सहज बनाने में यद्यपि एन0सी0टी0ई0 तथा एन0ए0ए0सी0 की महत्वपूर्ण भूमिका है। केन्द्र सरकार ने राष्ट्रीय अध्यापिका परिषद (N.C.T.E.) दिनांक 17 अगस्त, 1993 (1993 की संख्या 73) के अनुसरण में स्वायत्व निकाय के रूप में स्थापित की थी। राष्ट्रीय अध्यापक परिषद का मुख्य उद्देश्य सम्पूर्ण देश में अध्यापक शिक्षा प्रणाली की योजनातर्गत और समन्वित विकास को प्राप्त करना और इससे सम्बन्धित मामले हेतु एवं अध्यापक शिक्षा प्रणाली के मानकों एवं मानदण्डों का विनिमय और उचित अनुरक्षण प्रदान करना है तथा शिक्षक संस्थाओं को मान्यता प्रदान करना है। अध्यापकों की नियुक्ति के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता हेतु दिशा निर्देश तैयार करना तथा सर्वेक्षण का कार्य करना है। अनुसन्धान तथा नवीन तरीके अपनाना तथा शिक्षा के व्यवसायीकरण पर रोक लगाना है।

शिक्षक कौशल को उन्नत बनाने के लिये शिक्षण पद्धति में शिक्षण अभ्यास पर अधिक बल दिया जाय, साथ ही विषय विशेषज्ञ द्वारा शिक्षण कौशल व दक्षता को ध्यान में रखा जाय, जिससे छात्र शिक्षक अधिकाधिक लाभान्वित हो सके। कुछ प्रशिक्षण संस्थान N.C.T.E. से बी0एड0 की मान्यता प्राप्त करके अपने स्वपोषित शिक्षण संस्थाओं में प्रशिक्षण के नाम पर खानापूर्ति कर रहे हैं। शिक्षण संस्थाओं में योग्य शिक्षक का अभाव है, विशय विशेषज्ञ की नियुक्ति पर ध्यान नहीं दिया जाता, अतः इस तरफ ध्यान देना होगा। इन षिक्षण संस्थाओं को योग्य तथा अनुभवी शिक्षकों को नियुक्त करना होगा, जिससे छात्र शिक्षक प्रशिक्षण को प्रभावी बनाया जा सके तथा उसको कौशलपूर्ण बनाया जाय। परम्परागत शिक्षण पद्धति को छोड़ना होगा तथा शिक्षण को नवीन तकनीकी से जोड़ना होगा। साथ ही छात्र प्रवेश मानदण्डों में एक रूपता लानी जाये। व्यवहारिक शिक्षण पद्धति पर सिद्धान्तों की अपेक्षा व्यवहार पर अधिक बल दिया जाये। शिक्षक को नवीन अन्वेशित शिक्षण कौशलों, अवधारणाओं, सम्प्रत्ययों तथा मूल्यांकन पद्धति का ज्ञान होना चाहिए। प्रशिक्षण महाविद्यालयों में एक विस्तार सेवा केन्द्र की स्थापना होनी चाहिए, जो शिक्षकों को नयी अभिवृत्तियों तथा पाठ्यक्रम में उत्पन्न कठिनाइयों को दूर कर सके। सेवारत प्रशिक्षण से जुड़ी सभी संस्थाएँ (N.C.E.R.T., S.C.E.R.T., S.I.E.) के द्वारा शिक्षा विभाग, विश्वविद्यालय का वर्ष में एक बार निरीक्षण करके प्रशिक्षण शिक्षण संस्थाओं के गिरते हुए स्तर को सुधारने का प्रयास किया जाये। शिक्षक शिक्षा में कौशलपूर्ण प्रषिक्षण के लिए समय–समय पर महाविद्यालय स्तर पर जागरूक कार्यशाला का आयोजन किया जाये। शिक्षण विधियों को नवीनतम नीतियों का ज्ञान दिया जाये। नवीन सूचना ज्ञान को ऑनलाइन जोड़ने का प्रयास किया जाये। शिक्षण कौशल के विकास के लिए अधिक से अधिक अभ्यास के अवसर दिये जायें। शिक्षण शिक्षा के कार्यों के मूल्यांकन के लिये प्रशिक्षित व अनुभवी शिक्षक के माध्यम से कराया जाये। समय–समय पर महाविद्यालय स्तर पर छात्र अध्यापकों के लिये सेमीनार व वर्कशॉप का आयोजन किया जाये, उसमें विशेषज्ञों को आमंत्रित करके छात्र अध्यापकों को नवीन सम्प्रेषण व नवीन विधियों से अवगत कराया जाये। साथ ही शिक्षण संस्थाओं में छात्र शिक्षकों को शोधकार्य के लिये प्रोत्साहित किया जाये। शिक्षण कौशल को उन्नत करने के लिये सैद्धान्तिक शिक्षा के साथ–साथ व्यवहारिक शिक्षा पर अधिक बल दिया जाये। अन्त में कहा जा सकता है कि शिक्षण शिक्षा में शिक्षण कौशल के विकास के लिए मॉडल विकसित किये जायें। उपरोक्त सुझावों को यदि व्यवहार में करने का प्रयास होगा तब निश्चय ही शिक्षण प्रशिक्षण को कौशल पूर्ण बनाया जा सकता है।

lanHk xzUFk

1. The Hindustan Times, New Delhi, Reporting Atal Bihari Bajpai's Speech, 26th Nov., 1998.
2. N.C.E.T. (1998) करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर क्वालिटी टीचर एजूकेषन, नई दिल्ली
3. पाण्डेय राम शकल, ''भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास'', 2009, आगरा
4. पाल, एस0के0, ''शिक्षा के सिद्धान्त और आधार''
5. ओड, एल0के0, ''शिक्षा के नूतन आयाम'', हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, राजस्थान